

आर्य समाज क्या है ?

लेखक :

प. गंगाप्रसाद उपाध्याय

सम्पादक

कर्मयोगी लाजपत राय अग्रवाल

प्रकाशक

अमर स्वामी प्रकाशन विभाग

1058-विवेकानन्द नगर, गाजियाबाद-201001

(उत्तर प्रदेश)

द्वितीय बार : मार्च, सन् २००३ ई०

मूल्य- ३.०० केवल

“ओ३म्”

आर्य समाज क्या है ?

आर्य समाज क्या है ? आर्य शब्द का अर्थ है श्रेष्ठ या अच्छा और समाज का अर्थ हुआ अच्छे व्यक्तियों की सभा ।

‘आर्य समाज’ को महर्षि दयानन्द ने अप्रैल सन् १८७५ ई० अर्थात् चैत्र सुदी प्रतिपदा सम्वत् १९३२ विक्रमी को बम्बई में स्थापित किया था । इसके पश्चात् भारतवर्ष के प्रत्येक नगर और ग्राम में समाज खुल गये । इस समय संसार भर के समाजों की संख्या लगभग ८००० से भी अधिक है ।

आर्य समाज के नियम

आर्य समाज के नियम इस प्रकार हैं-

(१) सब सत्य विद्या और जो पदार्थ विद्या से जाने जाते हैं उन सबका आदि मूल परमेश्वर है ।

(२) ईश्वर सच्चिदानन्दस्वरूप, निराकार, सर्वशक्तिमान, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापी, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य, पवित्र और सृष्टिकर्ता है । उसी की उपासना करनी योग्य है ।

(३) वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है । वेद का पढ़ना, पढ़ाना और सुनना, सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है ।

असत्य मार्ग पर हम चाहे कितनी ही दूर वयों ना जा चुके हों, परन्तु वहाँ से लौट पढ़ना उस पर आगे चलने से बेहतर है । - कर्मयोगी लाजपत राय अग्रवाल

(३)

(४) सत्य को ग्रहण करने और असत्य के छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिये ।

(५) सब काम धर्मानुसार अर्थात् सत्य और असत्य का विचार करके करने चाहिये ।

(६) संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है अर्थात् शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना ।

(७) सबसे प्रीतिपूर्वक, धर्मानुसार, यथायोग्य बर्तना चाहिये ।

(८) अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करनी चाहिये ।

(९) प्रत्येक को अपनी ही उन्नति से सन्तुष्ट नहीं रहना चाहिये, किन्तु सबकी उन्नति में अपनी उन्नति समझना चाहिये ।

(१०) सब मनुष्यों को सामाजिक सर्वहितकारी नियम पालने में परतन्त्र रहना चाहिये और प्रत्येक हितकारी नियम में सब स्वतन्त्र रहें ।

इन नियमों को देखने से निम्न बातों का पता चलता है कि-

(१) ईश्वर एक है ।

(२) वेद ईश्वर का ज्ञान है इसलिये आर्यों को वेद पाठ अवश्य करना चाहिये ।

(३) यदि कभी मालूम हो जाये कि जो बात हम मानते या करते हैं वह असत्य है तो उनको छोड़ देना चाहिये । कभी भी पक्षपात नहीं करना चाहिये ।

(४) समाज की भलाई के लिये हर एक को कोशिश करनी चाहिये ।

जिस व्यक्ति का जीवन में दृढ़ निश्चय और विश्वास अटल है, वह दुनिया को अपने सांचे में ढाल सकता है ।

-कर्मयोगी ताजपत राय अग्रवाल

आर्य समाज के सिद्धान्त

ईश्वर विषयक

(१) ईश्वर एक है अनेक नहीं ।

(२) ईश्वर निराकार है । उसको आँख से नहीं देख सकते और न ही उसकी मूर्ति बना सकते हैं ।

(३) ईश्वर सर्वज्ञ और सर्वव्यापक है । वह सब कुछ जानता है वह छोटी सी चीज के अन्दर और बाहर भी उपस्थित है ।

(४) ईश्वर सर्वशक्तिमान् है । अर्थात् वह अपने किसी काम को करने के लिये आँख, कान, नाक आदि शरीर या अन्य किसी चीज या आदमी की बिना किसी सहायता के करता है । जीव और प्रकृति को अनादि मानने से ईश्वर पराश्रित या मुहताज नहीं होता । जीव और प्रकृति ईश्वर के उपकरण नहीं हैं । उपादान उपकरण नहीं होता ।

(५) ईश्वर अजन्मा और निर्विकार है । वह मनुष्य के समान जन्म-मरण में नहीं आता । अवतार भी नहीं लेता । राम, कृष्ण ईश्वर के अवतार नहीं थे, वे धर्मात्मा पुरुष थे, इसलिये उनके अच्छे कामों की याद करनी चाहिये और उनका अनुकरण करना चाहिये परन्तु उनकी मूर्तियों को ईश्वर समझ कर नहीं पूजना चाहिये ।

जीव विषयक

(१) जीव चेतन है, जिसकी संख्या अनन्त है ।

पहले माँ-बाप बच्चों को बोलना सिखाते हैं लेकिन बाद में ये बच्चे माँ-बाप को चुप रहना सिखाते हैं ।

-कर्मयोगी लाजपत राय अग्रवाल

(२) जीव न कभी मरता है न पैदा होता है । अर्थात् कभी ऐसा समय नहीं हुआ जब जीव न रहा हो और न ऐसा समय आयेगा जब जीव नहीं रहेगा ।

(३) जीव में ज्ञान तो है, पर थोड़ा और शक्ति भी थोड़ी है, इसलिये जीव को अल्पज्ञ कहते हैं ।

(४) जीव शरीर धारण करता है । कभी मनुष्य का कभी पशु का, कभी कीड़े आदि योनि का ।

(५) जीव जैसा कर्म करता है उसके फल के अनुसार वैसा ही शरीर मिलता है । बुरे कर्म के लिये बुरी योनि और अच्छे कर्म के लिये अच्छी योनि मिलती है । इसी को जीव अवतार कहते हैं । अवतार जीव का होता है, ईश्वर का नहीं ।

(६) जीव जब अच्छे कर्म करके सबसे ऊँची अवस्था को पहुँच जाता है तो उसे मोक्ष मिल जाता है अर्थात् शरीर नहीं रहता और स्वतन्त्र विचरता हुआ ईश्वर के आनन्द में मग्न रहता है ।

(७) मोक्ष काल (मुक्ति की अवधि) ३१ नील १० खरब और ४० अरब वर्ष के लिये होता है । इसके पश्चात् जीव मोक्ष से वापिस लौटता है और सर्वप्रथम उत्तम ऋषियों का शरीर धारण करता है । इस शरीर में यदि अच्छे काम करता है तो फिर मुक्त हो जाता है और यदि बुरे कर्म करता है तो नीचे की योनियों का चक्र आरम्भ हो जाता है ।

प्रकृति विषयक

(१) प्रकृति छोटे-छोटे परमाणुओं का नाम है ।

जितने दिन जिन्दा हो उसे परमेश्वर का उपहार समझो और इससे पहले कि लोग मुर्दा कहें, कुछ नेकी कर डालो ।

-कर्मयोगी लाजपत राय अग्रवाल

(६)

(२) यह परमाणु जड़ हैं । इनमें ज्ञान नहीं ।

(३) यह परमाणु अनादि और अनन्त हैं । अर्थात् न कभी उत्पन्न हुए न कभी नष्ट हुए ।

(४) ईश्वर इन्हीं परमाणुओं को जोड़कर सृष्टि बनाता है । आग, पानी और पृथ्वी यह इन्हीं परमाणुओं के संयोग का फल है । सूर्य, चाँद आदि इन्हीं से बने हैं । हमारे शरीर भी इन्हीं परमाणुओं से बने हैं ।

(५) जब परमाणु अलग-अलग हो जाते हैं तो उसको प्रलय या ब्रह्मरात्रि कहते हैं । जब सृष्टि बनी रहती है तो ब्रह्मदिन होता है ।

वेद

(१) वेद चार हैं । ऋग्वेद, सामवेद, यजुर्वेद और अथर्ववेद ।

(२) वेदों का ज्ञान ईश्वर ने सृष्टि के आरम्भ में चार ऋषियों को दिया । अर्थात् -

अग्नि ऋषि को ऋग्वेद ।

वायु ऋषि को यजुर्वेद ।

आदित्य ऋषि को सामवेद ।

अगिरा ऋषि को अथर्ववेद ।

(३) इन ऋषियों ने वेदों का अन्य ऋषियों और मनुष्यों को उपदेश दिया । संसार भर की सब विद्याएँ वेदों से ही निकलती हैं ।

(४) वेद स्वतः प्रमाण हैं परन्तु अन्य पुस्तकें परतः

सद्गुणशील, मुन्सिफमिजाज और अबलमंद आदमी तब तक नहीं बोलता, जब तक खामोशी नहीं हो जाती । -कर्मयोगी लाजपत राय अग्रवाल

प्रमाण । अर्थात् जो बात उन अन्य पुस्तकों में वेद के अनुकूल है वह ठीक है जो वेद विरुद्ध हैं वह गलत ।

(५) वेद संस्कृत भाषा में नहीं हैं । अपितु देववाणी (प्राकृत भाषा) में हैं । संस्कृत भाषा वेदों की भाषा से निकली है और अन्य सब भाषाएं संस्कृत से ।

(६) वेदों में इतिहास नहीं है । वेदों में यौगिक शब्द हैं, रूढ़ी नहीं । अर्थात् वेदों में ऐसे शब्द आये हैं जो हमको मनुष्यों के से नाम मालूम होते हैं, परन्तु उनके अर्थ मनुष्य नहीं हैं ।

(७) वेदों में राम, कृष्ण आदि अवतारों का वर्णन नहीं है ।

(८) वेदों में मुख्यतः तीन बातें हैं-ईश्वर के लिये भिन्न-भिन्न अवसरों के अनुकूल प्रार्थनायें, सृष्टि के नियम, मनुष्यों को उपदेश ।

(९) वेदों में इन्द्र, अग्नि, वरुण आदि शब्द कहीं कहीं पर ईश्वर के लिये आये हैं और कहीं भौतिक पदार्थों जैसे आग पानी आदि के लिये । इसका पता संगति से लग सकता है ।

(१०) पहले संसारभर में वेद मत ही था । पीछे से भिन्न-भिन्न मत पैदा हो गये ।

अन्य शास्त्र

आर्य समाज वेदों को तो ईश्वरकृत मानता है, परन्तु इनके अतिरिक्त नीचे लिखे ऋषियों के ग्रन्थों को भी उस हद तक प्रमाणिक मानता है जिस हद तक वह वेदों के अनुकूल हों, जैसे -

अगर तुम गलतियों को रोकने के लिये दरवाजे बन्द कर दोगे तो आपके पास केवल सत्य ही शेष रह जायेगा ।

-कर्मयोगी लाजपत राय अग्रवाल

(१) चार ब्राह्मण ग्रन्थ - ऐतरेय, साम, शतपथ और गोपथ ।

(२) ग्यारह उपनिषद - ईश, केन, कठ, प्रश्न, मुण्डक, माण्डूक्य, ऐतरेय, तैत्तरीय, छान्दोग्य, बृहदारण्यक और श्वेताश्वेतर ।

(३) छः दर्शन - गौतम ऋषि का न्याय, कणाद ऋषि का वैशेषिक, कपिल ऋषि का सांख्य, पतजंली ऋषि का योग, जैमिनी ऋषि का पूर्व मीमांसा और व्यास ऋषि का उत्तर मीमांसा अर्थात् वेदान्त दर्शन ।

(४) मानव धर्मशास्त्र या मनुस्मृति ।

(५) गोमिल गृह्यसूत्र, पारस्कर गृह्यसूत्र, आश्वलायन गृह्यसूत्र ।

(६) स्वामी दयानन्द के ग्रन्थ - सत्यार्थप्रकाश, ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका, संस्कारविधि, आदि-आदि ।

मनुष्य समाज

(१) पहले पहल मनुष्य तिब्बत में (बिना मैथुन के) उत्पन्न हुए वहाँ से सब जगह फैल गये । आर्य जाति से पहले और कोई जाति नहीं थी । आर्य जाति के ही भिन्न-भिन्न देशों में भिन्न-भिन्न नाम हो गये हैं ।

(२) पहले पहल एक आदमी और एक औरत नहीं वरन् बहुत से युवा पुरुष और बहुत सी युवतियाँ अमैथुन रूप में पैदा हुई थी । फिर इन्हीं की सन्तान आपस में विवाह करके मैथुनी सृष्टि द्वारा आगे बढ़ती गई ।

जीवन न मनोरंजन है, न आँसुओं की खान ! बल्कि जीवन एक सेवा सदन है ।

(३) सब मनुष्य जन्म से समान हैं । गुण, कर्म और स्वभाव के अनुसार उनके ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र नाम होते हैं ।

(४) पढ़ने-पढ़ाने वाले विद्वान व्यक्तियों का नाम ब्राह्मण है, शारीरिक रक्षा करने वालों का क्षत्रिय, व्यापार और कला कौशल वालों का वैश्य । जो सेवा करते हैं वह शूद्र हैं । गुण, कर्म और स्वभावानुसार वर्ण बदल जाता है अर्थात् शूद्र, ब्राह्मण हो सकता है और ब्राह्मण शूद्र बन जाता है ।

(५) शूद्र का कार्य नीच वर्ग का नहीं है और न ही उससे किसी को घृणा ही करनी चाहिये ।

(६) वेद पढ़ने का अधिकार सबको है अर्थात् सभी वर्ग के व्यक्तियों को है ।

यज्ञ

पाँच यज्ञ हर आर्य को प्रतिदिन करने चाहियें :-

(१) ब्रह्म यज्ञ - अर्थात् ईश्वर की पूजा और वेद पाठ ।

(२) देव यज्ञ - अर्थात् हवन ।

(३) भूत यज्ञ - अर्थात् चींटी, गाय, कुत्ता आदि आश्रित जीवों को भोजन देना ।

(४) पितृ यज्ञ - अर्थात् जीवित् माता-पिता का सत्कार । मरे हुए माता पिता का सत्कार करना असम्भव है । इसलिये मृतकों का श्राद्ध, तर्पण आदि नहीं करना चाहिये ।

(५) अतिथि यज्ञ - अर्थात् विद्वान साधु, सन्यासी अथवा वेदोपदेशक आदि घर पर आयें तो उनका आदर सत्कार करना ।

कठोर सत्य कड़वा होता है परन्तु उसका प्रतिफल मीठा होता है ।

-कर्मयोगी लाजपत राव अग्रवाल

संस्कार

जीवन में प्रत्येक आर्य के सोलह संस्कार होने चाहियें:-
तीन जन्म से पहले -

(१) गर्भाधान (२) पुंसवन (३) सीमन्तोन्नयन ।

छः बचपन में -

(१) जात कर्म (२) नामकरण (३) निष्क्रमण
(४) अन्नप्राशन (५) मुण्डन (६) कर्णवेध ।

दो विद्या आरम्भ करने के समय -

(१) यज्ञोपवीत (२) वेदारम्भ ।

दो विद्या समाप्त करने पर -

(१) समावर्तन (२) विवाह ।

तीन पिछली अवस्था में -

(१) वानप्रस्थ (२) सन्यास (३) अन्त्येष्टी ।

विवाह

(१) विवाह, कम से कम लड़की का सोलह वर्ष की अवस्था में और लड़के का पच्चीस वर्ष की अवस्था में करना चाहिये ।

(२) एक पुरुष एक ही स्त्री के साथ विवाह कर सकता है ।

(३) अक्षतयोनि विधवा का अक्षतवीर्य पुरुष के साथ विवाह करना ठीक है ।

(४) यदि आवश्यकता हो, तो अक्षतयोनि विधवा का अक्षतवीर्य विधुर के साथ विवाह हो सकता है ।

आर्य समाज का संगठन

(१) कम से कम नौ सभासदों का एक समाज होता है ।

घमण्ड से आदमी फूल सकता है, फूल नहीं राकता ।

-कर्मयोगी लाजपत राय अग्रवाल

(२) प्रत्येक सभासद को अपनी आय का शतांश (एक सौ रुपये पर एक रुपया) चन्दे में देना चाहिये ।

(३) शतांश चन्दा न देने वाले तथा सदाचार से न रहने वाले व्यक्ति सभासदी से पृथक किये जा सकते हैं ।

(४) प्रान्त के समाजों को संगठित करने के लिये प्रान्तीय प्रतिनिधि सभायें हैं । जिनमें प्रत्येक समाज के प्रतिनिधि जाते हैं । प्रतिनिधि भेजने का नियम है कि प्रति ३५ सभासद या किसी विशेष काम के लिये एक प्रतिनिधि भेजा जाता है ।

(५) प्रान्तीय प्रतिनिधि सभा के प्रबन्ध के लिये एक अन्तरंग सभा होती है ।

(६) प्रतिनिधि सभाओं द्वारा चुने हुए सभासदों की सार्वदेशिक सभा है जिसका स्थान दिल्ली में है ।

आर्य समाज के मुख्य कार्य

(१) शिक्षा का कार्य - भारत में अंग्रेजी शासन की नीति थी कि अंग्रेजी शिक्षा द्वारा भारतीयों को पाश्चात्य सभ्यता में रंग दिया जाये ताकि वे अपनी संस्कृति से विमुख हो जायें इसी उद्देश्य से देश में स्थान-स्थान पर अंग्रेजी विद्यालय खोले गये, आर्य समाज ने देश में भारतीय संस्कृति की रक्षा के लिये सर्वप्रथम पाठशालायें, गुरुकुल और कालेज खोले । इस समय आर्य समाज के आधीन भारतवर्ष में छोटे-बड़े सब मिला कर कई हजार विद्यालय हैं और इन पर करोड़ों रुपया व्यय होता है । बड़े-बड़े विद्यालयों के नाम यह हैं - डी० ए० वी० कालेज जालन्धर, गुरुकुल कांगड़ी, गुरुकुल वृन्दावन, कन्या महाविद्यालय

उड़ने के बजाय जब हम झुकते हैं तब बुद्धि के अधिक निकट होते हैं ।

जालन्धर, डी० ए० वी० कालेज देहरादून, डी० ए० वी० कालेज कानपुर, महाविद्यालय ज्वालापुर, हंसराज कालेज दिल्ली आदि।

(२) अनाथालय - लगभग पचास अनाथालय, जिनमें अनाथ बच्चे पाले जाते हैं, खोले गये जैसे कि फिरोजपुर, अजमेर, आगरा, बरेली, लखनऊ, भिवानी और देहरादून आदि।

(३) स्त्री जाति का सम्मान - आर्य समाज से पूर्व स्त्री जाति के विषय में बड़े ही संकुचित विचार थे। उनको वेद पढ़ने का अधिकार नहीं था और नीच व अपवित्र समझा जाता था। आर्य समाज ने वेद शास्त्रों से यह बताया कि नारी को भी वेद पढ़ने का अधिकार है और उसका शिक्षित होना आवश्यक है क्योंकि वास्तव में माता ही बालक को बनाने वाली है। इसके लिये कन्या गुरुकुल, कन्या पाठशालाएं और विधवा आश्रम जिनके द्वारा विधवाओं की सहायता होती है, खोले गये और हजारों विधवाएं इस प्रकार पतित होने से बचा लीं गईं। आर्य समाज ने पुरुष और स्त्री के समान अधिकार बताये और इस प्रकार स्त्री जाति को सम्मान दिलाया।

(४) हिन्दी का प्रचार - हिन्दी आज राष्ट्र भाषा के पद पर सुशोभित है। इसकी उन्नति का श्रेय जिन संस्थाओं को है, उनमें आर्य समाज का स्थान सबसे ऊँचा है। भारतवर्ष में कई भाषाएं बोली जाती हैं जो देश की एकता में बाधक हैं। महर्षि दयानन्द ने स्वयं गुजराती और संस्कृत का विद्वान होते हुए भी सबसे पहले यह अनुभव किया कि राष्ट्रीय एकता के प्रचार के

उस महामहिम पिता ने हमें नारी के रूप में एक शिक्षक, शिष्या, सखा, भाया, जीवन पथ का एक सच्चा सहायत्री, सम्पूर्ण हृदया एवं स्वतन्त्र आत्मा दी है।

-कर्मयोगी लाजपत राय अग्रवाल

भारत उनका अनुयायी होने के लिये तैयार था फिर भी उन्होंने उन क्षणिक प्रलोभनों पर लात मार दी, तो हमारा सिर ऋषि के तपोबल के सामने स्वभावतः स्वयं झुक जाता है । यदि स्वामी दयानन्द ऐसे ना होते तो वह ऋषि कहलाने के कदापि योग्य न होते । उनमें और साधारण सुधारकों में कोई भेद न होता । अभी ऋषि दयानन्द की मृत्यु को ६५ वर्ष ही हुए हैं । अभी समय इतना निकट है कि हमको उनका वास्तविक स्वरूप दिखाई नहीं पड़ता । जब कई शताब्दियाँ व्यतीत हो जायेंगी, उस समय ऋषि के गौरव को भली प्रकार समझ सकेंगे ।

जो लोग आर्य समाज पर संकुचित (Dogmatic) होने का दोष लगाते हैं, वह यह नहीं जानते कि अनियमता का नाम उदारता नहीं है । किसी समाज के संगठन के लिये निश्चित सिद्धान्तों की बहुत बड़ी आवश्यकता है । हिन्दू जाति के वर्तमान असंगठन का बहुत बड़ा कारण यह है कि इसके सिद्धान्त निश्चित नहीं रहे । जो आया उसने मनमानी की और जाति के टुकड़े-टुकड़े हो गये । ऋषि दयानन्द ने इसी रोग का निराकरण किया और समस्त जाति को एक सूत्र में बांधने का प्रयत्न किया । जब तक आर्यसमाज ऋषि के बताये हुए नियमों पर कटिबद्ध रहेगा, उसकी उन्नति ही होती जायेगी । परन्तु जिस प्रकार ऋषि दयानन्द ने चिरस्थायी लाभ के लिये क्षणिक लाभों की परवाह नहीं की, इसी प्रकार आर्य समाज को भी दृढ़ रहना चाहिये । जो लोग धूप और मेह

फलस्वरूप बड़ी संख्या में अछूत कहे जाने वाले भाई ईसाई और मुसलमान बनते जा रहे थे । आर्य समाज ने उनको वेद तक पढ़ने का अधिकार दिलाया और स्थान-स्थान पर उनके लिये पाठशालायें खोलीं । आर्यसमाज ने सबसे पहले अछूतोद्धार आंदोलन चलाया जिसे बाद में हमारी सरकार ने बहुत बल दिया ।

(१०) वेदों का प्रचार बढ़ाया - आइये, ऐसे आर्य समाज के सभासद बनिये क्योंकि इसी से देश का कल्याण होगा ।

नोट - जो सज्जन आर्य समाज के बारे में अधिक जानकारी प्राप्त करना चाहते हैं, वे निम्नलिखित पुस्तकें पढ़ें -

- | | |
|-----------------------------------|-----------------------------------|
| १ सत्यार्थ प्रकाश | - महर्षि दयानन्द कृत |
| २ ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका | - महर्षि दयानन्द कृत |
| ३ आर्य समाज क्या है ? | - महात्मा नारायण स्वामी कृत |
| ४ आर्य समाज के नियमों की व्याख्या | - स्वामी सत्यानन्द कृत |
| ५ निर्णय के तट पर (पांचो भाग) | - अमर स्वामी सरस्वती तथा कर्मयोगी |
| (प्राचीन शास्त्रार्थों का संग्रह) | लाजपत राय अग्रवाल कृत |



जब हम गिरते हैं तो अच्छी तरह चलने का रहस्य जान लेते हैं ।

आर्य समाज के उपकार

है केवल आर्य समाज, सबकी भलाई बाहने वाला । टेक

होवे जहाँ किसी की हान, वहाँ पर होता यह बलिदान ।

अर्पण करके अपने प्राण, सबका धर्म बचाने वाला ॥१॥

जहाँ पर लाखों हिन्दू भाई, बनते मुसलमान, ईसाई ।

आखिर हुआ है यही सहाई, उनको गले लगाने वाला ॥२॥

देश में लाखों विधवा नार, निशदिन करतीं हाहाकार ।

फैला हुआ था अत्याचार, उनको यही बचाने वाला ॥३॥

जब उजड़ा था बीकानेर, मचा था चारों ओर अंधेर ।

वहाँ पहुँचा था यह ही शोर, मरतों को बचाने वाला ॥४॥

मोपले कई हुए बे ईमान, बरजोरी करे थे मुसलमान ।

पहुँचा मालावार उस आन, दुखियों को धीर बंधाने वाला ॥५॥

सच पूछो तो आर्य समाज, रखता भारतवर्ष की लाज ।

तो भी बुरा कहें मूर्ख आज, यही था सबको जगानेवाला ॥६॥

जो तुम चाहते हो कल्याण इसके अर्पण कर दो प्राण ।

वैदिक धर्म में आवे जान, विनती करे "टोहने" वाला ॥७॥



अपराध करने वाले से, सहने वाला कहीं अधिक दोषी है ।

-कर्मयोगी लाजपत राय अग्रवाल